डॉ. हरित कुमार मीणा

गाँधी विमर्श के विभिन्न आयाम

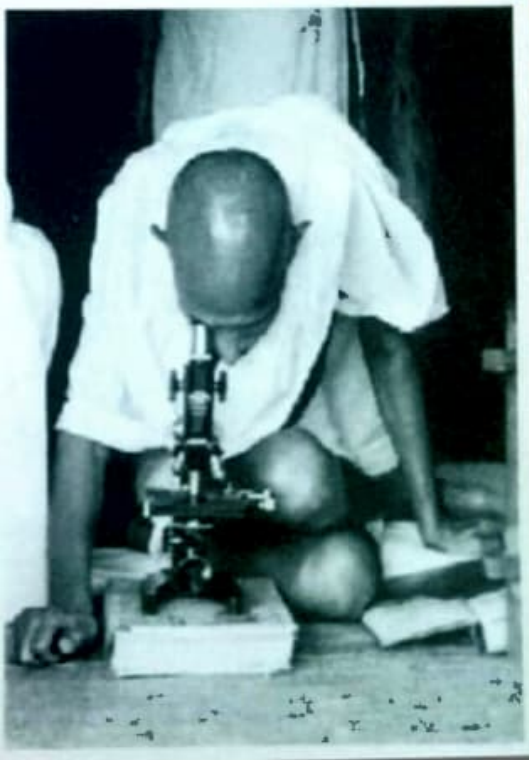

Scanned by TapScanner

BEST PUBLISHING HOUSE
A, 4406 12, Ansari Road
Daryaganj, New Delhi 110002 (India)
Ph: 011-7210090037, 011-65842996
E-mail: bestpublishinghouse@gmail.com

© संपादक

Rs.595/-

प्रस्तुत प्रकाशन का लक्ष्य ऐसी सूचनाएं उपलब्ध कराना है जो वैध और विश्वसनीय माने जाने वाले स्रोत से जुटाई गई है। यह किसी प्रकार की पेशेवर सलाह देने अथवा विषय विश्लेषण करने का प्रयास नहीं है और न ही इसे इस रूप में देखा जाना चाहिए। इस पुस्तक में निहित सूचनाओं की सत्यता और विश्वसनीयता की हर संभव जांच करने की कोशिश की गई है, लेकिन इसके बावजूद प्रस्तुत प्रकाशन में रह गई किसी प्रकार की असावाधानीवश हुई गलतियों, चूक या त्रुटियों (टंकन या तथ्यात्मक) के कारण होने वाली हानि के लिए प्रकाशक अथवा लेखक उत्तरदायी नहीं है।

पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पुर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

First Edition: 2021

ISBN: 978-93-8900-134-1

PRINTED IN INDIA

8

गाँधीजी का स्वप्न रामराज्य एवं उसकी वर्तमान प्रासंगिकता

अभिषेक अग्रवाल[1] एवम डॉ. श्रद्धा गर्ग[2]

महात्मा गाँधी आधुनिक भारत के जनक थे। वे एक राजनीतिक दार्शनिक, शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं आध्यात्मिक आदि गुणों से सम्पन्न महापुरूष थे, जिन्होनें सभी क्षेत्रों में पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी एवं आस्था के साथ काम किया। उन्होनें एक आदर्श राज्य रामराज्य की अवधारणा रखी।

महात्मा गाँधी ने जीवन भर जिस स्वराज की स्थापना के लिए प्रयास किया, उस स्वराज्य का तात्पर्य ही 'रामराज्य' है। रामराज्य ही उनका स्वराज्य था, उनका मानना था कि केवल विदेशी शासकों को हटाकर देशी नौकरशाहों के हाथ में सत्ता चली जाये तो इतने मात्र से देश का भला नहीं हो सेकता है, जनता को ऐसे राज्य की आवश्यकता है जो सुराज्य हो।

हिन्दू संस्कृति में राम द्वारा किया गया आदर्श शासन रामराज्य के नाम से प्रसिद्ध है। वर्तमान समय में रामराज्य का प्रयोग सर्वोत्कृष्ट शासन या आदर्श शासन के प्रतीक के रूप में किया जाता है। रामराज्य लोकतंत्र का परिमार्जित रूप माना जाता है, वैश्विक स्तर पर रामराज्य की स्थापना गाँधीजी की इच्छा थी, गाँधीजी ने भारत में अंग्रेजी शासन से मुक्ति के बाद ग्राम स्वराज के रूप में रामराज्य की कल्पना की थी।

"रामराज्य का अर्थ है, विश्व जातीय शान्ति तथा मानवतावादी आधार का साकार होना। इसमें आडम्बर, बर्बरता तथा संघर्ष के लिए कोई स्थान नहीं होगा, परन्तु ईश्वर के साम्राज्य का साकार होना करोड़ो लोगो के भगवान में सच्चे विश्वास पर निर्भर होगा। स्पष्ट है कि औपचारिक रूप में वैधानिक संगठन की अपेक्षा राम–राज्य अधिक संयोजनशील होगा।"[1]

[1]सहायक प्राध्यापक, (इतिहास विभाग) गुरू घासीदास (केन्द्रीय) विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छ.ग.
[2]सहायक प्राध्यापक, (राजनीति विज्ञान विभाग), गुरू घासीदास (केन्द्रीय)

Scanned by TapScanner